1. (ब) नीचे की ओर ढलवां अवतल 1

2. बजट रेखा एक ऐसी रेखा है जिस पर विभिन्न बिन्दु दो वस्तुओं के ऐसे बण्डल दर्शाते हैं जिन पर उपभोक्ता का व्यय उसकी आय के बराबर होता है। 1

3 (ब) पूरक 1

4. सामान्य वस्तु की कीमत और मांग में विपरीत सम्बन्ध होने के कारण ~~मांग~~ मांग की कीमत लोच के माप में ऋणात्मक चिन्ह होता है जबकि पूर्ति की कीमत लोच के माप में धनात्मक चिन्ह होता है क्योंकि वस्तु की कीमत और पूर्ति में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। 3

5.

| X वस्तु (इ.) | Y वस्तु (इ.) | सीमान्त रूपान्तरण दर |
|---|---|---|
| 0 | 16 | |
| 1 | 12 | 4Y : 1X |
| 2 | 8 | 4Y : 1X |
| 3 | 4 | 4Y : 1X |
| 4 | 0 | 4Y : 1X |

1½

क्योंकि सीमान्त रूपान्तरण दर स्थिर है इसलिए उत्पादन संभावना वक्र नीचे की ओर ढलवां सीधी रेखा होगी। 1½

(रेखाचित्र आवश्यक नहीं है)

6. 'भारत में बनाइए' की अपील विदेशी उत्पादकों को भारत में उत्पादन करने का निमंत्रण है। इससे संसाधन बढ़ेंगे जिससे देश की उत्पादन क्षमता बढ़ेगी। परिणामस्वरूप उत्पादन संभावना वक्र ऊपर की ओर खिसक जाएगी। (रेखाचित्र आवश्यक नहीं है) 3

(अथवा)

बेरोजगारी कम करने का देश की उत्पादन क्षमता पर कोई प्रभाव नहीं होता क्योंकि उत्पादन क्षमता पूर्ण रोजगार की मान्यता पर निर्धारित की जाती है
बेरोजगारी यह दर्शाती है कि देश में उत्पादन क्षमता से कम पर उत्पादन हो रहा है। बेरोजगारी कम करने से उत्पादन क्षमता पर काम करने में सहायता मिलती है। 3
(रेखाचित्र आवश्यक नहीं है)

7. जब सरकार किसी वस्तु की न्यूनतम कीमत निर्धारित करती है तो न्यूनतम कीमत निर्धारण करते हैं जैसा कि रेखाचित्र में कीमत $OP_1$ है।

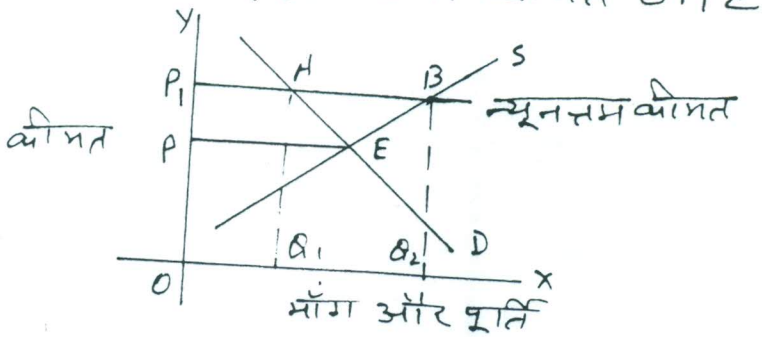


1

इस कीमत पर उत्पादक $P_1B$ (या $OQ_2$) मात्रा सप्लाई करने को तैयार जबकि उपभोक्ताओं की माँग केवल $P_1A$ (या $OQ_1$) है। अतः AB (या $Q_1Q_2$) मात्रा पूर्ति आधिक्य है। इस स्थिति में उत्पादक न्यूनतम कीमत से कम पर बेचने की गैरकानूनी कोशिश कर सकते हैं। 2

(न्यूनतम मजदूरी दर पर आधारित उत्तर भी स. है।)

केवल दृष्टीहीन परिक्षार्थियों के लिए:

जब सरकार किसी वस्तु की कीमत पर नीची सीमा लगाती है तो इसे न्यूनतम कीमत कहते हैं। 1
क्योंकि यह कीमत संतुलन कीमत से अधिक है, इस कीमत पर क्रेता जितनी मात्रा खरीदना चाहते हैं, उत्पादक उससे अधिक मात्रा सप्लाई करना चाहते हैं। इससे पूर्ति आधिक्य की स्थिति उत्पन्न होती है। इस स्थिति में उत्पादक गैरकानूनी तरीकों से कम कीमत पर वस्तु बेच सकते हैं। 2

8 गैर-कीमत प्रतियोगिता का अर्थ है कीमत के अलावा अन्य तरीकों से प्रतियोगिता करना। कीमत युद्ध की स्थिति के डर से फर्म कीमत प्रतियोगिता से बचती है। वे अन्य तरीके प्रयोग करती हैं जैसे कि विज्ञापन, बेहतर ग्राहक सेवा आदि। 3

9 (अ) जैसे जैसे अधिकाधिक उत्पादन किया जाता है औसत अचल लागत घटती है। 2

(ब) औसत परिवर्ती लागत शुरू में घटती है और उत्पादन के एक स्तर के बाद बढ़ने लगती है। 2

(अथवा)

औसत सम्प्राप्ति = $\frac{\text{कुल सम्प्राप्ति}}{\text{कुल उत्पादन}}$ 1

कुल सम्प्राप्ति = कीमत × उत्पादन

∴ औसत सम्प्राप्ति = $\frac{\text{कीमत} \times \text{उत्पादन}}{\text{उत्पादन}}$ = कीमत 3

10

| कीमत | व्यय | माँग |
|---|---|---|
| 4 | 100 | 25 |
| 3 | 75 | 25 |

$1\frac{1}{2}$

माँग की लोच = $\frac{\text{कीमत}}{\text{माँग}} \times \frac{\text{माँग में परिवर्तन}}{\text{कीमत में परिवर्तन}}$ 1

$= \frac{4}{25} \times \frac{0}{-1}$ 1

$= 0$ $\frac{1}{2}$

11

दी हुई कीमत पर पूर्ति के बढ़ने का अर्थ है पूर्ति आधिक्य इससे विक्रेताओं में प्रतियोगिता होगी जिससे कीमत ~~बढ़ेगी~~ घटेगी।
कीमत के घटने से माँग बढ़ेगी और पूर्ति घटेगी बाजार में ये परिवर्तन तब तक होते रहेंगे जब तक बाजार फिर से संतुलन की स्थिति में न आ जाए। 6

12

उत्पादक के संतुलन की दो शर्तें हैं।

(i) सी. लागत = सी. सम्प्राप्ति

(ii) संतुलन के बाद सी. लागत > सी. सम्प्राप्ति

मान लीजिए सी. लागत > सी. सम्प्राप्ति। ऐसी स्थिति में फर्म के लिए उत्पादन घटाना या बढ़ाना लाभप्रद होगा। मान लीजिए सी. लागत < सी. सम्प्राप्ति, ऐसी स्थिति में फर्म के लिए अधिक उत्पादन करना लाभप्रद होगा। फर्म उतना उत्पादन करेगी जिस पर सी. लागत = सी. सम्प्राप्ति।
सीमान्त लागत और सीमान्त सम्प्राप्ति का बराबर होना उत्पादक के संतुलन के लिए पर्याप्त शर्त नहीं है। मान लीजिए सी. लागत और सीमान्त सम्प्राप्ति बराबर हैं लेकिन एक और इकाई का उत्पादन करने पर सीमान्त लागत, सीमान्त सम्प्राप्ति से अधिक हो जाती है। ऐसी स्थिति में अधिक उत्पादन करना लाभप्रद है यानि उत्पादक संतुलन की स्थिति में नहीं है। यदि सीमान्त लागत और सीमान्त सम्प्राप्ति की समानता उत्पादन के ऐसे स्तर पर हो जिसके बाद सीमान्त लागत सीमान्त सम्प्राप्ति से अधिक हो तो उत्पादक केवल उतना ही उत्पादन करके संतुलन की स्थिति में होगा जिस पर सीमान्त लागत और सीमान्त सम्प्राप्ति बराबर हैं।

(रेखाचित्र आवश्यक नहीं है)

13.

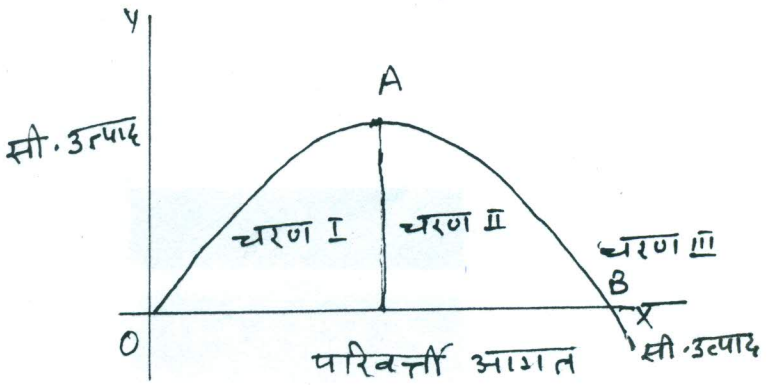


1½

चरण I : सीमान्त उत्पाद A बिन्दु तक बढ़ता है।

चरण II : A और B के बीच सीमान्त उत्पाद घटता है लेकिन धनात्मक है।

चरण III : सीमान्त उत्पाद घटता है और ऋणात्मक होता है, B के बाद। 1½

कारण :

चरण I : शुरू में स्थिर आगत की तुलना में परिवर्ती आगत की मात्रा बहुत कम होती है। जैसे ही उत्पादन बढ़ाया जाता है परिवर्ती आगत का विशिष्टीकरण और स्थिर आगत का ~~कुल~~ कुशल उपयोग होने लगता है। इससे उत्पादिता बढ़ती है और सीमान्त उत्पाद बढ़ता है।

चरण II : उत्पादन के कुछ स्तर के पश्चात स्थिर आगत पर दबाव बढ़ने लगता है जिससे उत्पादिता घटती है। सीमान्त उत्पाद घटने लगता है लेकिन धनात्मक रहता है।

चरण III : स्थिर आगत की तुलना में परिवर्ती आगत की मात्रा बहुत अधिक हो जाती है जिससे कुल उत्पाद घटने लगता है। सीमान्त उत्पाद घटता है और ऋणात्मक हो जाता है। 3

इकाईहीन परिक्षार्थियों के लिए

| परिवर्ती आगत (इकाई) | कुल उत्पाद | सीमान्त उत्पाद (इकाई) | |
|---|---|---|---|
| 1 | 6 | 6 | चरण I |
| 2 | 20 | 14 | |
| 3 | 32 | ~~14~~ 12 | चरण II |
| 4 | 40 | 8 | |
| 5 | 40 | 0 | |
| 6 | 37 | -3 | चरण III |

1½

चरण : (1) 2 इकाई तक कुल उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ता है।
(2) 5 इकाई तक कुल उत्पाद घटती दर से बढ़ता है। 1½
(3) 6 इकाई से आगे कुल उत्पाद घटता है।

कारण : जो ऊपर दिए गए हैं। 3

14. कीमत $_x$ = 2 रु., कीमत $_y$ = 2 रु. सीमान्त प्रतिस्थापन दर=2

उपभोक्ता के सन्तुलन की स्थिति में:

$$\text{सी. प्र. दर} = \frac{\text{कीमत } x}{\text{कीमत } y}$$

दिए हुए मूल्यों के आधार पर;

$$\text{सी. प्र. दर} > \frac{\text{कीमत } x}{\text{कीमत } y} \quad \text{क्योंकि } 2 > \frac{2}{2}$$ 3

अतः उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में नहीं है।

सी. प्र. दर के x और y की कीमतों के अनुपात से अधिक होने का अर्थ है कि उपभोक्ता x की एक और इकाई के लिए बाजार से अधिक कीमत देने को तैयार है। अतः उपभोक्ता x की अधिक इकाईयां खरीदना शुरू कर देगा। ऐसा करने पर ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता नियम के कारण सीमान्त प्रतिस्थापन दर घट जाएगी। ऐसा तब तक होता रहेगा जब तक की सीमान्त प्रतिस्थापन दर x और y की कीमतों के अनुपात के बराबर न हो जाए। 3

इनके बराबर होने पर उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में होगा।

अथवा

कीमत $_x$ = 5, कीमत $_y$ = 4 और सी.उ.$_x$ = 4 सी.उ.$_y$ = 5

उपभोक्ता के संतुलन की शर्त है: $\frac{\text{सी.उ.}x}{\text{कीमत } x} = \frac{\text{सी.उ.}y}{\text{कीमत } y}$

प्रश्न में दिए मूल्यों के अनुसार:

$$\frac{\text{सी.उ.}x}{\text{कीमत } x} < \frac{\text{सी.उ.}y}{\text{कीमत } y} \quad \text{क्योंकि } \frac{4}{5} < \frac{5}{4}$$ 3

उपभोक्ता संतुलन की स्थिति में नहीं है क्योंकि x की प्रति रु. सी.उ. y की प्रति रु. सी.उ. से कम है इसलिए उपभोक्ता x की कम मात्रा खरीदेगा और y की अधिक मात्रा खरीदेगा। परिणामस्वरूप ह्रासमान सीमान्त उपयोगिता नियम के कारण सी.उ.x बढ़ेगी और सी.उ.y घटेगी और अन्त में 3

$\frac{\text{सी.उ.x}}{\text{कीमत x}}$ और $\frac{\text{सी.उ.y}}{\text{कीमत y}}$ बराबर हो जाएँगे।

## खण्ड - ब

15. (द) राजकोषीय घाटा - ब्याज भुगतान 1

16 अन्तिम उत्पादों का मूल्य जिन्हें क्रेता एक निश्चित अवधि में निश्चित आय के स्तर पर खरीदने की योजना बनाते हैं समग्र माँग कहलाता है। 1

17 (द) अनन्त 1

18. (ब) में कमी आने की संभावना होती है। 1

19 (द) आय कमाने वालों से। 1

20 विदेशों से उधार, भुगतान संतुलन खाते के पूँजीगत खाते में दर्ज किया जाता है क्योंकि इससे देश की अन्तर्राष्ट्रीय देनदारी बढ़ती है। 1½

इसे जमा पक्ष की ओर दर्ज किया जाता है क्योंकि इससे देश में विदेशी विनिमय आता है 1½

21. वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद = $\frac{\text{मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद}}{\text{कीमत सूचकांक}} \times 100$ 1½

$500 = \frac{\text{मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद}}{125} \times 100$ 1

मौद्रिक सकल घरेलू उत्पाद = $\frac{500 \times 125}{100} = 625$ ½

22 स्थिर विनिमय दर वह विनिमय दर है जो सरकार/केन्द्रीय बैंक द्वारा निर्धारित की जाती है और विदेशी विनिमय की माँग और पूर्ति से प्रभावित नहीं होती। 1½

लचीली विनिमय दर वह विनिमय दर है जो बाजार में विदेशी विनिमय की माँग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है और बाजार की शक्तियों से प्रभावित होती है। 1½

अथवा

नियंत्रित अस्थायी विनिमय दर लचीली विनिमय दर है जिसके उतार चढ़ाव को कम करने के लिए केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय बाजार के जरिये हस्तक्षेप करता है। जब विदेशी विनिमय दर बहुत ऊँची होती है तो केन्द्रीय बैंक अपने कोष से विदेशी मुद्रा बेचना शुरू कर देता है। जब यह बहुत नीची होती है केन्द्रीय बैंक बाजार में विदेशी मुद्रा खरीदना शुरू कर देता है। 3

23 रा. आय = स्वायत्त उपभोग + सी.उ.प्र.(राष्ट्रीय आय) + निवेश 1½

1000 = 100 + सी.उ.प्र.(1000) + 120 1

सी.उ.प्र. = $\frac{1000 - 100 - 120}{1000} = 0.78$ 1

सी. बचत प्र. = $1 - 0.78 = 0.22$ ½

24. बैंकों के बैंक के रूप में केन्द्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों की आरक्षित नकदी के एक भाग को अपने पास रखता है। इससे वह बैंकों को आवश्यकता पड़ने पर उधार देता है। केन्द्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों को समाशोधन और अंतरण सुविधाएँ भी प्रदान करता है। 3

(अथवा)

देश में करेंसी जारी करने का अधिकार केवल केन्द्रीय बैंक को होता है। इससे वित्तीय प्रणाली में कुशलता बढ़ती है। इससें करेंसी संचालन में एकरूपता आती है और मुद्रा पूर्ति पर केन्द्रीय बैंक का नियंत्रण हो जाता है। 3

25 मुद्रा पूर्ति के दो घटक होते हैं: करेंसी और वाणिज्य बैंकों में जमाएँ करेंसी केन्द्रीय बैंक जारी करता है जबकि जमाओं का निर्माण वाणिज्य बैंक ऋण देकर करता है। 2

वाणिज्य बैंक मुख्यतया निवेशकों को ऋण देते हैं। निवेश में वृद्धि से गुणक प्रक्रिया द्वारा राष्ट्रीय आय बढ़ती है। 2

26 सरकार अपनी कर और व्यय नीति द्वारा आय की असमानताएँ कम कर सकती है। ऊँची आय वालों से ऊँची दर पर कर ले सकती है और उनके द्वारा प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं पर अधिक कर लगा सकती है। इससे प्राप्त होने वाली राशी को गरीबों को सुविधाएँ प्रदान करने पर खर्च किया जा सकता है जैसे कि उनके बच्चों को निःशुल्क शिक्षा, निशुल्क चिकित्सा, सस्ते मकान आदि। इससे उनकी प्रयोज्य आय बढ़ेगी। 6

27. (i) एक फर्म द्वारा बैंक को ब्याज का भुगतान फर्म द्वारा एक कारक भुगतान माना जाता है क्योंकि फर्म उत्पादन के लिए ऋण लेती है। इसलिए इसे राष्ट्रीय आय में शामिल करते हैं। 2

(ii) बैंक द्वारा एक व्यक्ति को ब्याज का भुगतान एक कारक भुगतान है क्योंकि बैंक बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करने के लिए ऋण लेते हैं। इसलिए इसे राष्ट्रीय आय में शामिल किया जाता है। 2

(iii) एक व्यक्ति द्वारा बैंक को ब्याज का भुगतान राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता क्योंकि व्यक्ति उपभोग के लिए ऋण लेता है उत्पादन के लिए नहीं। 2

(यदि कारण नहीं दिए हैं तो कोई अंक न दें)

18 अभावी माँग : पूर्ण रोजगार के स्तर पर जब समग्र माँग समग्र पूर्ति से कम होती है तो इस अन्तर को अभावी माँग कहते हैं। इससे कीमतें कम होती हैं। 2

बैंक दर वह दर है जिस पर केन्द्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों को दीर्घकाल के लिए ऋण देता है। केन्द्रीय बैंक ब्याज बैंक दर घटाकर अभावी माँग को कम कर सकता है। जब केन्द्रीय बैंक इस दर को घटाता है तो वाणिज्य बैंक भी जिस दर पर उधार देते हैं उसे घटा देते हैं। इससे ऋण लेना सस्ता हो जाता है और लोग ज्यादा ऋण लेते हैं। इससे समग्र माँग बढ़ती है और इससे प्रकार अभावी माँग कम करने में सहायता मिलती है। 4

अथवा

अति माँग : जब पूर्ण रोजगार के स्तर पर समग्र माँग समग्र पूर्ति से अधिक होती है तो इस अन्तर को अति माँग कहते हैं। इससे कीमतें बढ़ती हैं। 2

प्रति पुनर्खरीद दर वह ब्याज दर है जो केन्द्रीय बैंक वाणिज्य बैंकों द्वारा की गई जमाओं पर देता है। केन्द्रीय बैंक प्रति पुनरखरीद दर बढ़ाकर अति माँग को कम कर सकता है। इसके बढ़ने से वाणिज्य बैंक केन्द्रीय बैंक में जमाएँ बढ़ाने के लिए उत्साहित होंगे। इससे इनकी ऋण देने की सामर्थ्य कम हो जाएगी। वाणिज्य बैंकों द्वारा कम ऋण दिए जाने से समग्र माँग घटेगी। 4

29. बाजारकीमत पर निवल रा. उ. = v + ii + (iv + viii − ix) − iii − vii  1½

= 300 + 50 + 60 + 8 − 8 − (−10) − (−5)  1

= 425 करोड़ रु.  ½

व्यैक्तिक आय = vi − xi − xii  1½

= 280 − 60 − 20  1

= 200 करोड़ रु.  ½